मधुबन ओम् शान्ति अंक 367 फरवरी 2023

पत्र-पुष्प

"दृढ़ संकल्प की प्रतिज्ञा द्वारा हर बात में पास विद ऑनर बनो"
दादी जी की शुभ प्रेरणायें 22-01-23

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर सेट रहने वाले तीव्र पुरुषार्थी, दृढ़ संकल्प की प्रतिज्ञा द्वारा हर बात में पास विद आनर होने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ शिव जयन्ती सो गीता जयन्ती व स्वर्णिम युग जयन्ती की बहुत-बहुत बधाई हो।

बाद समाचार - आप सभी ने जनवरी मास में बहुत अच्छी तपस्या करके ब्रह्मा बाप समान अपनी पुरुषोत्तम स्थिति बनाई। अभी इस फरवरी मास में फिर बेहद सेवा का गोल्डन चांस है। सभी भाई बहिनें शिव जयन्ती का त्योहार खूब धूमधाम से मनाते हैं। चारों तरफ शिव बाबा के ध्वज भी फहराते, प्रभात फेरियां निकालते, प्रतिज्ञायें करते और परमात्मा शिव के अवतरण तथा उनके चल रहे विश्व परिवर्तन के महान कार्यों की जानकारी देने निमित्त प्रदर्शनी, सेमीनार आदि भी आयोजित करते हैं। शिव जयन्ती निमित्त मधुबन से कुछ सूचनायें वा प्रतिज्ञायें आप सबके पास मधुबन रोज़री में भेज दी गई हैं। जरूर उसी प्रमाण आप सभी खूब धूमधाम से, उमंग-उत्साह से सेवायें करेंगे। यही लक्ष्य रखना है कि अब कोई भी आत्मा परमात्म सन्देश से वंचित न रह जाए।

बापदादा हम बच्चों को विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफल होने का साधन बताते हैं - हम सबकी श्रेष्ठ जीवन, यही प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम जो बोलें वही हमारे स्वरूप से दिखाई दे। जैसे कहते हैं कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मायाजीत, रहमदिल हैं, रूहानी सेवाधारी हैं। तो जो बोलते हैं वह प्रैक्टिकल हमारे स्वरूप में हो।

जैसे वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। तो हम सबके नयनों से हर एक को अलौकिकता का अनुभव हो। उन्हों के मन में क्वेश्चन उठे कि यह ऐसा कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि आपको ऐसा बनाने वाला कौन? तो अपनी स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। परमात्म प्रत्यक्षता के लिए अब प्रतिज्ञा करनी है कि **वेस्ट खत्म करेंगे, बेस्ट बनेंगे।** अब बाप को प्रख्यात करने के लिए हम सबको प्रत्यक्ष होना पड़ेगा, इसके लिए बाबा कहते बच्चे, अपनी कमजोरियों को विदाई दो तब सृष्टि के कल्याणकारी बन सकेंगे। बोलो, ऐसा ही लक्ष्य रख ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो ना!

समय प्रमाण प्यारे अव्यक्त बापदादा के मंगल मिलन की सुन्दर रिमझिम के समाचार तो आप सब सुनते देखते रहते हो। कैसे बापदादा अव्यक्त वतन में होते भी अपने बच्चों को मधुबन घर में आकर्षित कर अनेकानेक अनुभूतियां करवा रहे हैं। हर ग्रुप में 20-21 हजार नये पुराने भाई बहनें बाबा के घर में आकर खूब भरपूर हो रहे हैं। संगठन में आते ही सभी में नया उमंग-उत्साह और पुरुषार्थ में तीव्रता स्वत: आ जाती है। अच्छा - आप सभी खुश मौज में रहते अपनी उड़ती कला द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष करने की सेवायें कर ही रहे हो। सबको इनएडवांस बहुत-बहुत बधाई।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.रतनमोहिनी

ये अव्यक्त इशारे

प्रतिज्ञा द्वारा अपने सम्पूर्ण रूप से परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनो

1) अभी समय बहुत थोड़ा है और काम बहुत करना है इसलिए अपने आपसे दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि आज से यह पुराने संस्कार, यह व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न होने नहीं देंगे। जब ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे तब प्रत्यक्षफल मिलेगा, परमात्म प्रत्यक्षता होगी।

2) कोई भी प्रतिज्ञा करते हैं तो जल को साक्षी रखकर करते हैं। तो बाप भी बच्चों से यह जल की लोटी चढ़वाते हैं, प्रतिज्ञा करो कि आज से क्यों की क्यू को खत्म करेंगे क्योंकि इस क्यों शब्द से ही व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। क्यों शब्द से कल्पना करना शुरू हो जाता है। तो जब यह क्यों शब्द खत्म हो जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रह सकेंगे।

3) पाण्डवों के लिए प्रसिद्ध है कि वह कभी भी प्रतिज्ञा से हिलते नहीं थे। आप सबकी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता को लायेगी। तो सभी को तीन प्रतिज्ञायें करनी है:- 1- सहनशीलता का बल अपने में धारण करेंगे। 2- व्यर्थ पर फुलस्टाप लगायेंगे। और 3- आसुरी संस्कारों पर पहरा देंगे।

4) पुरुषार्थ के स्पीड को ढीला करने वाली मुख्य बात है – अपनी बीती हुई बातें या दूसरों की बीती हुई बातों को चिन्तन में लाना और चित्त में रखना इसलिए प्रतिज्ञा करो कि पुरानी बीती हुई बातों को कभी भी स्मृति में नहीं लायेंगे। बीती हुई बातें ऐसे महसूस हों जैसे बहुत पुरानी कोई जन्म की बात है, तब पुरुषार्थ की स्पीड तेज होगी।

5) प्रतिज्ञा करो कि कैसी भी समस्या आये, कोई भी कारण बने लेकिन हम और कोई पर भी बलि नहीं चढ़ेंगे। जैसे बीज बोने के बाद उसको जल दिया जाता है तब वृक्ष रूप में फलीभूत होता है। इस रीति यह भी जो प्रतिज्ञा की है उसको पूर्ण करने के लिए संग का जल भी चाहिए तो अपनी हिम्मत भी चाहिए।

6) कोई भी कार्य के लिए पहले प्रतिज्ञा होती है फिर प्लैन होता है। फिर होता है प्रैक्टिकल। और प्रैक्टिकल के बाद फिर होती है चेकिंग कि यह हुआ, यह नहीं हुआ। चेकिंग के बाद जो बीती सो बीती, आगे उन्नति का साधन रखते हैं। तो पुरुषार्थ में जो भी नुकसानकारक बातें हैं, उन्हें समेटने और समाने की प्रतिज्ञा करो फिर उसको चेक भी करो।

7) स्वयं में परिपक्वता लाने के लिए अपने आपसे प्रतिज्ञा करो। सदा यह स्लोगन स्मृति में रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं'। कब कर लेंगे, ऐसा नहीं सोचो। अभी बनकर दिखाओ। जितना प्रतिज्ञा करेंगे उतनी परिपक्वता वा हिम्मत आयेगी और फिर सहयोग भी मिलेगा।

8) रोज़ इस प्रतिज्ञा का तिलक लगाओ कि हर बात में पास विद आनर बनकर दिखायेंगे। पास विद आनर अर्थात् संकल्पों में भी सजा न खायें। वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क की बात छोड़ दो। वह तो मोटी बात है लेकिन संकल्पों में भी न उलझें, न मूंझें - ऐसी प्रतिज्ञा करने वाले हिम्मतवान बनो।

9) प्रतिज्ञा द्वारा पुरानी बातों को, पुराने संस्कारों को ऐसा परिवर्तन में लाओ, जैसे जन्म परिवर्तन होने के बाद पुराने जन्म की बातें भूल जाती हैं। ऐसा पुराने संस्कारों को भस्म कर दो, उन अस्थियों को भी सम्पूर्ण स्थिति के सागर में समा दो।

10) सम्पूर्ण स्वरूप को धारण करने की अपने आपसे प्रतिज्ञा करो। प्रयत्न नहीं। अब प्रयत्न का समय गया। अब प्रतिज्ञा और सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त समझने से कभी भी हार नही खायेंगे।

11) जो प्रतिज्ञा की जाती है उसको पूर्ण करने के लिए पावर भी चाहिए। कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। भल सारे विश्व की आत्माएं मिलकर प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बन करके ही दिखायेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का ही यादगार अचलघर है।

12) जिस बात की फोर्स से प्रतिज्ञा की जाती है वह प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल रूप ले लेती है क्योंकि उसमें विल पावर होती है। जैसे स्थूल कार्य कितना भी ज्यादा हो लेकिन प्रतिज्ञा करने से

कर लेते हो। अगर ढीला विचार होगा, न करने का ख्याल होगा तो कभी पूरा नहीं करेंगे। फिर बहाने भी बहुत बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करने से फिर समय भी निकल आता है और बहाने भी निकल जाते हैं।

13) परमात्म प्रत्यक्षता के लिए अब समय प्रमाण वा बाप की पढ़ाई प्रमाण, विश्व के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष प्रमाण बनाओ। कोई भी देखे तो अनुभव करे कि इन्हें पढ़ाने वाला वा बनाने वाला स्वयं सर्वशक्तिवान बाप है। यह प्रत्यक्ष प्रमाण ही बाप को प्रत्यक्ष करने का सहज और श्रेष्ठ साधन है।

14) प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसी स्मृति में रहना। जब भी कोई आपको देखे तो देखते-देखते बाप की स्मृति स्वत: आ जाए, हरेक के दिल से निकले कि कमाल है बनाने वाले की तो बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा। बाप आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई दे और आप गुप्त हो जाओ। अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है, फिर हरेक की दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान करते हुए सुनेंगे।

15) विश्व कल्याण की सेवा के क्षेत्र में सहज सफलता का साधन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप की प्रत्यक्षता है। जो बोलो वह देखें। बोलते हो कि हम ब्राह्मण आलमाइटी अथॉरिटी हैं, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, मायाजीत, रहमदिल हैं, रूहानी सेवाधारी हैं। तो जो बोलते हो वह प्रैक्टिकल स्वरूप में हो।

16) जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। तो आप हर बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हों के नयनों में कोई विशेषता है। साधारण नहीं अनुभव करें, अलौकिक हैं। उन्हों के मन में क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि आपको ऐसा बनाने वाला कौन? तो अपनी स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो।

17) आप सबका पहला-पहला व्रत वा प्रतिज्ञा है कि मन वाणी और कर्म में पवित्र रहेंगे। एक बाप दूसरा ना कोई, यह व्रत सभी ने लिया है। तो सदैव इस व्रत को स्मृति में रखो। स्मृति से कभी वृत्ति चंचल नहीं होगी। प्रवृत्ति, परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नों वश नहीं होंगे।

18) अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि छोटी-छोटी बातों में मेहनत नहीं लेंगे, किसी भी माया के आकर्षित रुप में धोखा नहीं खायेंगे। सदैव यही स्मृति रखो कि हम दु:ख हर्ता सुख कर्ता के बच्चे हैं। किसके भी दु:ख को हल्का करने वाले स्वयं कभी भी एक सेकेण्ड के लिए भी संकल्प वा स्वप्न में भी दु:ख की लहर में नहीं आयेंगे।

19) प्रतिज्ञा करो कि कभी किसी रुप में भी, किसी भी परिस्थिति में माया से हारेंगे नहीं लेकिन लड़ेंगे और विजयी बनेंगे। मायाजीत बनकर दिखायेंगे। 2- अपने आपको सतोप्रधान बनाकर दिखायेंगे। 3- विस्मृति के संस्कारों को सदा के लिए विदाई देंगे। 4- सदा हिम्मत हुल्लास में रहेंगे और दूसरों को भी हिम्मत दिलायेंगे।

20) जब से जन्म लिया है तब से प्रतिज्ञा की है कि मन अर्थात् संकल्प, समय और कर्म जो भी करेंगे वह बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। अगर ईश्वरीय सेवा की बजाए कहाँ संकल्प वा समय वा तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको सम्पूर्ण वफादार नहीं कह सकते इसलिए सम्पूर्ण वफादार बनो।

21) आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि क्या इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसी भी पावन आत्मायें कोई बन सकती हैं! तो आप उन्हों को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकती हैं और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज्यादा देखने चाहते हैं तो चारों ओर हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी और बाप प्रत्यक्ष हो जायेगा।

22) बापदादा के सामने तो बहुत प्रतिज्ञायें की हैं लेकिन अब से लेकर सिवाए मणी के और कुछ नहीं देखेंगे, यह प्रतिज्ञा करो तब खुद ही माला के मणी बन करके सारी सृष्टि के बीच चमकेंगे। जब ऐसी प्रतिज्ञा करेंगे तब ही प्रत्यक्षता होगी। अब प्रयत्न करने का समय गया। अब तो प्रतिज्ञा और अपने सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त बनाओ तो प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जायेगा।

23) प्रत्यक्षता करने के लिए अब लास्ट व लास्ट सो फास्ट पुरूषार्थ है - प्रतिज्ञा। कोई भी बात की प्रतिज्ञा करना कि यह करना है, यह नहीं करना है। संकल्प किया और स्वरूप हुआ, ऐसी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। तो प्रतिज्ञा से अपने को और बाप को प्रख्यात करो।

24) सम्पूर्ण प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाने के लिए सिर्फ यही बात

विशेष अन्डरलाइन करनी है – प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा–दोनों का बैलेन्स सर्व आत्माओं को बापदादा द्वारा ब्लैसिंग प्राप्त होने का आधार है। तो प्रतिज्ञा करो कि कभी भी किसी भी हालत में हार नहीं खायेंगे, परमात्म गले का हार, श्रृंगार, विजयी रत्न बनेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करना अर्थात् प्रत्यक्ष सबूत देना ही परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है।

25) परमात्म प्रत्यक्षता के लिए अब प्रतिज्ञा करो कि वेस्ट खत्म करेंगे, बेस्ट बनेंगे। जब कोई परीक्षा आये तो प्रतिज्ञा याद करो। तो जब सभी ऐसे बेस्ट बन जायेंगे तब ही प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। प्रत्यक्षता का पर्दा खुलने के पहले आप मूर्तियां पूरी तैयार होनी चाहिए।

26) अब मैदान पर प्रत्यक्ष होने का समय है। शूरवीर, शक्तिरूप बनकर प्रत्यक्ष रुप में सामने आओ। जब इस रूप में प्रत्यक्ष होंगे तब बाप और बच्चों की प्रत्यक्षता होगी। जितना प्रत्यक्ष होंगे उतनी प्रत्यक्षता होगी। तो बाप को प्रख्यात करने के लिए प्रत्यक्ष होना पड़े, इसके लिए अपनी कमजोरियों को विदाई दो तब सृष्टि के कल्याणकारी बन सकेंगे।

27) प्रत्यक्षता के पहले विश्व की इस विशाल स्टेज पर हर वर्ग वाला पार्टधारी प्रत्यक्ष होना चाहिए। हर वर्ग का अर्थ ही है - विश्व की सर्व आत्माओं के वैराइटी वृक्ष का संगठन रूप। कोई भी वर्ग रह न जाए जो उल्हना दे कि हमें तो सन्देश नहीं मिला इसलिए नेता से लेकर झुग्गी-झोपड़ी तक जो भी वर्ग हैं। पढ़े हुए सबसे टॉप साइन्सदान और फिर जो अनपढ़ हैं, उन सबको सन्देश देकर अपने जीवन के प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा समीप सम्बन्ध में लाने की सेवा करो तब प्रत्यक्षता होगी।

28) अपने सम्पूर्ण स्वरूप को प्रत्यक्ष करने के लिए जो कुछ सुना है, उसको गहराई से सोच कर अपनी रग-रग में समाकर अपनी चलन से प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ। जो कुछ चल रहा है, जो कर रहे हो वह ड्रामानुसार बहुत अच्छा है लेकिन अभी समय प्रमाण, समीपता के प्रमाण अपने सम्पूर्ण शक्ति रुप का प्रभाव दूसरों पर डालो तब ही अंतिम प्रत्यक्षता समीप ला सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"नॉलेजफुल के साथ अनुभवीमूर्त बनो फिर सबको अनुभव कराओ"

(गुल्जार दादी जी 04-08-07)

ओम् शान्ति का एक शब्द मंत्र कहने से ही अपने स्वरूप की स्मृति याद दिलाता है। दूसरा बाबा शान्ति का सागर है उसकी स्मृति दिलाता है और तीसरी बात अपना घर शान्तिधाम उसकी स्मृति दिलाती है। तो जब भी हम ओम् शान्ति शब्द बोलते हैं तो हमें तीनों ही स्मृति आती हैं और स्मृति से समर्थी आती है। कैसी भी समस्या हो लेकिन तीनों ही याद आ जावें - स्वयं का रूप, बाप और अपना घर, अगर यह तीनों बातें आप अभी एक सेकण्ड में याद करो, अनुभव करो तो क्या कोई समस्या आपके आगे ठहर सकती है? जहाँ बाबा याद आ गया, अपने घर की याद आ गई, अपने स्वरूप की स्मृति आ गई वहाँ समस्या क्या होगी? लेकिन ओम् शान्ति तो कह देते हैं, अर्थ स्मृति में नहीं आता है। तो कभी भी कोई भी समस्या आवे, जैसे आग लगती है तो फौरन क्या याद आता है? पानी। ऐसे जब हम ओम् शान्ति कहते हैं और स्मृति स्वरूप हो जाते हैं, तो स्वत: ही सारी समस्यायें खत्म होंगी। जैसे यहाँ अन्धियारा हो जाये और हम लाइट का स्वीच ऑन करें तो अन्धकार स्वत: ही चला जाता है ना। लाइट का आना अन्धकार का स्वत: ही जाना। ऐसे ही यह भी अभ्यास अगर करो तो कोई भी बात आवे, तो अर्थ सहित तीनों याद से ओम् शान्ति कहो तो समस्या ठहर नहीं सकती है। ऐसा अनुभव है?

बाबा ने हम टीचर्स को गुरूभाई कहा है, गुरू के भाई, इतनी बड़ी सीट दी है ना। सभी मुरली सुनाते हैं ना। गुरू की जो

गद्दी है, मुरली सुनाने की, वो बाबा ने किसको दी? टीचर को। कोई भाई वा कोई स्टूडेन्ट कहे हम भी रोज़ मुरली सुनायें तो आप देंगी, नहीं ना। टीचर को ही देते हैं इसलिए बाबा हमको गुरूभाई कहता है, तो बाबा ने महिमा भी की है टीचर्स की कि मेरे समान हैं, गुरूभाई हैं, लेकिन बाबा इशारा देता कि जो कुछ कहते हो उसका पहले अनुभव हो। मैं आत्मा हूँ, शरीर अलग है, आत्मा अलग है लेकिन आत्मा जिस समय अनुभव होगी, तो आत्म-अभिमानी बनने से ऑटोमेटीकली सेकण्ड में बाप के साथ कनेक्शन स्वत: ही जुट जायेगा। हम सब टीचर बनें क्यों? सरेण्डर हुए क्यों? जब हम समर्पण हुए बाबा के प्रति तो सबसे पहले हमको बाबा के प्यार ही ने आकर्षित किया ना। ज्ञान तो पीछे समझा, चाहे बहनों द्वारा बाबा ने दिया, दादियों द्वारा दिया या टोली द्वारा मिला क्योंकि कईयों को टोली भी प्रेम की आकर्षण करती है। लेकिन पहले-पहले परमात्म प्यार ने आपको आकर्षित किया। तो उसी प्यार में कोई खोये रहें तो आप सोचो उनकी स्थिति कितनी ऊंची और श्रेष्ठ होगी! फिर ऐसों के आगे समस्या और संस्कार क्या हैं, कुछ नहीं क्योंकि यही दो बातें सबको परेशान करती हैं जिसको कहते हैं हम चाहते नहीं हैं लेकिन मेरी नेचर ही ऐसी है।

तो पहले यह सोचो कि समस्यायें क्यों आती हैं? पुरुषार्थ तीव्र क्यों नहीं होता है? कमजोरियाँ क्यों आती हैं? और चाहते भी खत्म हो नहीं हो पाती हैं तो उसका कारण क्या है? आत्म-अनुभूति की कमी है। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करने के अभ्यास की कमी है। तो मैं कहने से ही आत्मा का रूप सामने आता है, अनुभव होता है? अगर आत्म-अनुभूति नहीं हुई, तो कभी भी अविनाशी प्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है। सोचने से आयेगा अच्छा, मैं आत्मा सुख-स्वरूप हूँ, शान्त-स्वरूप हूँ, प्रेम-स्वरूप हूँ, परमात्मा के बच्चे हैं, ये सोचेंगे जरुर। एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवी मूर्त नहीं है। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप हैं, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है। इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है।

ट्रैफिक कन्ट्रोल करो, माना संकल्पों की ट्रैफिक बन्द करके साइलेंस स्वरूप की स्मृति में रहो। साइलेंस स्वरूप तो आत्मा ही है। ऐसे समय व्यर्थ वा साधारण संकल्प की तो बात ही नहीं है। अभी बाबा ने 8 बारी ड्रिल की बात कही, वो इसीलिए कहा कि बीच-बीच में बार-बार यह अभ्यास करते रहने से लिंक जुटा रहता है जिससे निरंतर साइलेंस स्वरूप आत्मा का नशा (स्थिति) रहे क्योंकि लिंक टूटा फिर जोड़ा तो इसमें मेहनत भी लगेगी, टाइम भी लगेगा। तो चेक करते रहो और चेन्ज करते रहो। योग किया या युद्ध किया, यह तो खुद को ही पता पड़ता है। मन के अन्दर की गति (स्थिति) क्या है, वो हम ही जानते हैं क्योंकि आत्म-अभिमानी नहीं या मन के ऊपर कन्ट्रोल नहीं तो हमारा वायदा क्या है? मनजीते जगतजीत कैसे बनेंगे! मायाजीत कैसे बनेंगे! तो जितना समय चाहे मन कन्ट्रोल में रहे, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। कर्म-कॉन्सेस की जगह सोल-कॉन्सेस की स्थिति हो, इसके लिए 8 बारी क्या पर बहुत बार निरंतर इसका अभ्यास करते रहना पड़ेगा तभी आदत पड़ जायेगी।

मन को विन करो तो वन नम्बर में आ जायेंगे। मन की मालिक आत्मा है, तो मन के मालिक बनो तब कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर मानेगी। तो मैं आत्मा मालिक हूँ, यह स्मृति पक्की हो जाये, नहीं तो वही पुराने संस्कार प्रकट होते रहेंगे, बार-बार धोखा खाते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे। तो मतलब अमृतवेले योग का महत्व अनुभव में हो। अमृतवेले से लेके बाबा मेरे लिए आता है, हमारा टीचर हमारे लिए आता है, बाबा वाणी सुनाने हमारे लिए आता है, खास हमारे को पढ़ा रहा है, ऐसे स्वयं को एक योग्य स्टूडेन्ट समझ करके बैठो। अभी एक सेकण्ड में मैं आत्मा हूँ, उस अनुभूति में रहो...और कुछ नहीं सोचना...।

तो सभी ने अनुभव किया या युद्ध की? इसके लिए रोज़ कोई न कोई स्वमान स्मृति में रखो और उसको चेक करो तो अनुभवी मूर्त बनना है। जो हम कहते हैं, उसके अनुभव में रहें। परमात्मा ही हमारा सब कुछ है, यह अनुभव है? तो अनुभवी मूर्त बनेगी तो सब समस्यायें खत्म हो जायेंगी क्योंकि मालिक बन गये, करनकरावनहार बन गये, तो वो वायब्रेशन वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाता है। ऐसे शक्तिशाली वायुमण्डल में जो भी स्टूडेन्ट आयेंगे उन्हें भी मदद मिलेगी फिर आपका सेन्टर देखो कितना उन्नति को पाता है। तो खुद अनुभवी बनके वातावरण को अनुभव की शक्ति दो, स्टूडेन्ट को हिम्मत दिलाओ अनुभव की। अच्छा।

दादी जानकी जी द्वारा उच्चारित अनमोल वचन

सेवा और सम्बन्ध में निजी शक्ति बढ़ती रहे, खर्च न हो, जरा भी अपसेट होने की आदत ना हो (9-4-2006)

हमारा मीठा बाबा सहज विधि जो सुना रहा है उससे तुरन्त सिद्धि मिल रही है, एक्सन प्लैन और क्या बनाना है? रुकावट भले आये परन्तु रुकेंगे नहीं। हिम्मत के साथ विश्वास इतना है कि रुकने वाली बातें आयेगी वो चली जायेंगी। इतना बहादुर बनना है। जो साक्षी होकर पार्ट प्ले करता है वो न्यारा और परमात्म प्यार की शक्ति से लाइट माइट हो जाता है। यह प्लैन नहीं है प्रैक्टिकल है।

अपसेट होने की आदत नहीं है पर सब खुश रहें, यह ध्यान जरूर है। बाबा के घर में जो भी आवे खुश होके जाये, यह भावना हमेशा रही है। कोई भी चीज़ मेरी नहीं हैं। इससे आत्मा बाबा का प्यार खींचने की पात्र बनी है। अपनी निजी शक्ति सेवा और सम्बन्ध में बढ़ती रहे, खर्च न हो, यह कोशिश रहती है। देह-अभिमान का अंश भी होगा तो मार्क्स कम हो जायेंगी। अगर सच्चा पुरुथार्थी हूँ तो फुल मार्क्स हों। पालना, पढ़ाई, प्राप्तियां जो मिली हैं वो हमारे चेहरे और चलन में अगर नहीं हैं तो शान नहीं है।

प्लैन बनाने वाले बाबा के बच्चे बहुत बैठे हैं। अच्छा प्लैन बनाकर हमको देते हैं। हमें बुद्धि को शान्त प्लेन रखना है। ड्रामा में सब हुआ पड़ा है, बाबा कहता भी है अगर ब्रह्मा बाबा से भी कुछ हो गया तो बाबा ठीक कर देगा। पर हमको अपनी मनमत शामिल नहीं करनी है।

कुछ भी बात सामने आ जाये अन्दर रेडी रहें, बाबा कहता बच्ची सब ठीक हो जायेगा। ये मीठे बाबा के बोल हैं बच्ची हो जायेगा। बाबा के बोल में इतनी शक्ति है तो मैं क्यों कहूँ - कैसे होगा, कौन करेगा! आज दिन तक यह खेल देखा है। बाबा कैसे करता कराता है, यह खेल देखा है, यही है प्रैक्टिकल प्लान।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

नियम संयम ही जीवन का श्रृंगार हैं (27-2-1990)

1. हम सभी बच्चों को पहला निश्चय है कि स्वयं ज्ञान सागर बाबा हमें पढ़ाता भी है, वर्सा भी देता है तो मुक्ति जीवनमुक्ति भी देता है। जब यह निश्चय है तब नशा है और जब नशा है तब उनकी आज्ञाओं पर हम चलते हैं। तीनों रूपों से बाबा हमें रोज़ श्रृंगारता है। सतगुरु रूप से वरदान देता है, जिन वरदानों से हम सभी भरपूर होकर आगे बढ़ते हैं। ज्ञान रत्नों से हमारा श्रृंगार करता है। प्यार का सागर हमें कितनी पालना देता है, आज्ञायें करता है, उससे भी हम आगे बढ़ते हैं। दुनिया के लोग भौतिकवाद में रहते हैं और हम सबको बाबा ने सारी दुनिया की भौतिक बातों से दूर कर दिया है। किसी की बुद्धि में यह नहीं है कि हमे वापस घर जाना है। हमें मूलवतन बुद्धि में याद है। सूक्ष्मवतन भी संगमयुग पर हम बच्चों के लिए है। हम यही पुरुषार्थ करते हैं कि बाप समान फरिश्ता बनें, सम्पन्न बनें और सम्पन्न बनकर वाया सूक्ष्मवतन घर चलें। तभी छोटे-बड़े को बाबा ने यही लक्ष्य दिया है कि बाप समान सम्पूर्ण बनना है। चाहे कोई 25 वर्ष का हो, 5 वर्ष का हो या 5 मास का। सबकी बुद्धि में यही लक्ष्य है कि हमें बाप के समान सम्पूर्ण, कर्मातीत बनना है। जब यह लक्ष्य है तो चेक करना होता है कि हमारी स्थिति ऐसी बनी है या अभी हम बाप से कितना दूर हैं! क्या हम एवररेडी हैं? हम सर्व बंधनों से मुक्त, ईश्वरीय नशे में, एक की ही लगन में इतना मस्त रहते हैं जो आज भी शरीर छूटे तो हमारे कर्मों का हिसाब पीछे न हो। हमने जिस मंजिल पर पांव रखा है, उसे पार करना है। हम रोज़ सोचते हैं कि आखिर हमें इतनी ऊंची मंजिल पर ले जाने वाला कौन है! जो दुनिया को नहीं मिला, न मिल सकता है वह है हमारा बाबा। जो हमें इतनी सहज नॉलेज देकर अपने समान बना रहा है।

2. बाबा हमें चार सब्जेक्ट के चार लेसन देता है - हम कितने भी कार्य में रहें लेकिन हमें देह के भान से परे रहना है। देह-अभिमान का भी त्याग हो - यह कहना तो सहज है लेकिन इसी में ही मेहनत है। देह के भान से परे रहो तो सर्व समस्यायें हल हो जायेंगी। खुद लाइट हो जायेंगे। यही है कर्मातीत स्थिति बनाने का पहला साधन वा पहली साधना। यही अभ्यास है, यही बाबा की रोज़ की आज्ञा है। अपने से पूछो - रोज मैं सवेरे से रात

तक इस आज्ञा का पालन करती हूँ! जो इस आज्ञा को रोज़ पालन करते, फुल अटेन्शन रखते उनकी सब प्रकार की धारणायें अच्छी होती है। जिसने इस राज़ को समझा कि मुझे इस देह के भान से डिटैच रहना है, उनकी इस दुनिया में किसी भी बात से अटैचमेन्ट नहीं रहती। बाबा ने जो हमें 4 सब्जेक्ट दी हैं - उन चारों का ही बैलेन्स चाहिए। लेकिन कभी-कभी सर्विस में तो बहुत आगे इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है। बाकी पीछे की तीनों सब्जेक्ट में अटेन्शन कम हो जाता है। लेकिन चारों सब्जेक्ट एक बैलेन्स में रहें यह है पढ़ाई का सार। कोई कहते - मेरा बाबा पर बहुत विश्वास है, लेकिन बाबा से विश्वास माना आज्ञाओं पर विश्वास। बाबा की पहली-पहली आज्ञा है कि इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी नहीं देखो। इस देह में रहते भी देह से ममत्व नहीं रखो। किसी भी व्यक्ति, वैभव से अटैचमेन्ट न रहे। तो अपने आपसे पूछो किसी भी बात में रिंचक मात्र भी बुद्धि का अटैचमेन्ट है? अगर स्वयं की स्वयं से भी अटैचमेन्ट है तो भी रांग है। दूसरे से है तो भी रांग है। अगर कोई कहे हम सर्विस के बिगर रह नहीं सकते, बेचैन हो जाते हैं तो यह भी अटैचमेन्ट हो गई। यह भी नहीं चाहिए क्योंकि बाबा हमें बहुत-बहुत दूर चैन की दुनिया में ले जा रहा है। किसी भी प्रकार की वहाँ बेचैनी नहीं होगी। अगर कभी यह बेचैनी का शब्द भी आता है तो समझना चाहिए आज स्थिति नीचे ऊपर है। हम सबको चैन देने वाले हैं, चैन देने वाले अगर बेचैन हो जाएं तो समझो गड़बड़ है। बाबा की आज्ञा है - हर बात में डिटैच रहो। सब कुछ करो लेकिन करते हुए भी डिटैच रहो। बुद्धि के अभिमान का त्याग, सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अन्दर से हुआ पड़ा हो। लेकिन कोई त्यागी माना वैरागी नहीं है। हम आपस में इतने प्यारे भी हैं। बाबा ने कहा है कि हम अकेले आये, अकेले जाना है... लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अकेले मौज करें। यह भी ठीक नहीं। परिवार भी साथ में हैं। बाबा का बच्चों से प्यार कितना है। कितना प्यार से बाबा आते, हम बच्चों को सजाते, हम बच्चों का भी फिर इतना ही बाबा से प्यार है, इसमें बाबा सर्टीफिकेट देते हैं। मुरली से, सेवा से तो नम्बरवन प्यार है। लेकिन धारणाओं से भी नम्बरवन प्यार हो। सामने देखने वाले हमारी धारणाओं को देखते हैं। जितनी-जितनी धारणा की आकर्षण होगी उतनी सर्विस स्वत: होगी। इसलिए हमारी धारणा भी नम्बरवन चाहिए। हम सभी की पहली धारणा है - पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सब्जेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती। इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती, कि आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परन्तु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेन्ट में आते तो 5 मंजिल से नीचे गिर पड़ते। जब कोई 5 मार से गिरता है तो रहम पड़ता, तरस पड़ता है, इसके लिए मर्यादाओं को सदा साथ रखो। बाबा ने हम सबको ज्ञान दिया है कि हम आत्मायें भाई-भाई हैं। परन्तु यह नॉलेज है कि आत्मा भाई है, दृष्टि भाई की हो लेकिन व्यवहार भाई बहन का हो। ऐसे नहीं बहन को कहो - आओ भाई जी। व्यवहार में ईश्वरीय मर्यादाओं का नियम रखना पड़ता। अगर नियमों में पक्के रहो तो कभी 5 मार से नहीं गिरेंगे। अगर कोई गिरता है तो पहले मर्यादा का किसी न किसी प्रकार से उल्घंन करता है। वैसे तो बाबा ने हमें बहुत रमणीक गुह्य ज्ञान दिया है, हम उसी में मस्त रहें। लेकिन यह परिवार है, परिवार में हम सभी मिलकर रहते हैं, यह क्लास है। क्लास में एक तरफ भाई दूसरी तरफ बहनें बैठती, यह भी मर्यादा है। बाबा कहते – आपस में रुहरिहान करो तो यह रुहरिहान क्लास के लिए दी गई है। ऐसे नहीं हम अकेले में बैठकर रुहरिहान करें। माया देखती रहती है कि कहाँ से खिड़की खुली हुई है, उसी जगह से वह प्रवेश करती है। तो माया को आने का मौका न दो क्योंकि अकेले में बैठकर रुहरिहान करेंगे तो थोड़ी-थोड़ी दिल की लेनदेन शुरु हो जायेगी। ऐसे में माया अन्दर घुस जायेगी। यह है माया का दरवाजा इसलिए नीति से प्रीति रखो। नियम संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। नहीं तो बुद्धि आज नहीं आयेगी, 4 मास नहीं जायेगी लेकिन 5 वें मास जरूर जायेगी। बाबा ने कभी एक साथ टेबुल पर बैठकर भाईयों को खाने की छुट्टी नहीं दी, टेबल पर हंसीमजाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह सब छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत जरूरी हैं। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नॉलेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नॉलेज के साथ मर्यादायें भी रखना जरूरी है।

3. अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुलस्टाप आया। एक सेकण्ड बीता फुल स्टाप। यह ऐसी नॉलेज है जो अपने को सदा निश्चिन्त रख सकते हैं। ड्रामा की नॉलेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती – ड्रामा का फुलस्टाप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो। ड्रामा कहा – बिन्दु लगा। बिन्दी स्थिति कभी अपनी स्थिति को ऊपर नींचे नहीं करेगी, अचल अडोल रखेगी। अपनी स्थिति अडोल हो, व्यवहार कुशल

हो। आपस में बहुत स्वीट व्यवहार रखो लेकिन किसी की स्वीटनेस से प्रभावित न हो जाओ। यहाँ पर चाहिए सेफ्टी। यह बड़ा स्वीट है नहीं। ऐसे नहीं यह स्वीट है तो आप मक्खी बन जाओ। मधु भले बनो पर मक्खी नहीं बनो। अपने को भी स्वीट बनाओ। बाबा ने कोई हठयोग नहीं दिया है कि आपस में नहीं हंसो, हंसो बहलो, खुशी में नाचो परन्तु पर्सनल किसी के साथ हंसना बहलना यह रांग है। मुझे पर्सनल सर्विस चाहिए सेन्टर चाहिए, साथी चाहिए... यह रांग है। परिवार से इन्डीपिन्डेन्ट नहीं रहो। हम सब एक दूसरे पर डिपेन्ड है। कोई-कोई कहते हैं हम तो मार्डन है। हम मार्डन रहना चाहते हैं लेकिन बी.के. माना बैकुण्ठ के वासी। वह मार्डन नहीं रह सकते। मार्डन तो रावण के हं। बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सिखा दिया, प्यूरिटी सिखा दिया। प्यूरिटी में रहना ही हमारे लिए मार्डन रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मार्डन से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मार्डन, उसके माडल बन रहे हैं। किसी भी प्रकार का शौक है – चाहे पार्टियों में जाने का, चाहे दूर-दूर जाकर पिकनिक आदि करने का... यह सब शौक योग की स्थिति से नीचे ले आयेंगे। यह योग की स्थिति में बाधक हैं। जितनी मर्यादा रखो उतना अच्छा है। आज माया नहीं है, कल किसी भी घड़ी माया आ सकती है। इसलिए एक दूसरे से प्राइवेट पत्र व्यवहार न रखो। प्राइवेट लेनदेन न करो। यह सब धारणायें बनाओ। नियम संयम ही जीवन का आदर्श हैं। जितना प्यारे बनो उतना न्यारे बनो। जितना नियमों का पालन करेंगे उतना स्वधर्म की स्थिति में अच्छे रहेंगे।

4. हम सबका एक ही लक्ष्य है, हम एक परिवार के हैं। प्रेम के व्यवहार को जानते हैं, यहाँ न कोई गुरु की गद्दी है न कोई शिष्य है। किसी भी स्थान पर किसी का नाम नहीं है। न प्रापर्टी का झगड़ा है न कुर्सी का झगड़ा है। हम सबका टाइटिल है बी.के.राजयोगी। जब कभी थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता - तो उसके दो कारण होते - एक तो अपने को सदा राइट समझते, और दूसरे को रांग समझ लेते। जब ऐसी भावना दिल में पैदा होती है तब टक्कर होती है। जैसे बाबा ने गरुरु गद्दी नहीं दिया, ऐसे किसी को बॉस नहीं बनाया। सब शिक्षक हैं, कोई बड़ा कोई छोटा नहीं। व्यवहार में सिर्फ निमित्त् मात्र रहते। जब स्व का भाव छोड़ देते, मधुर बोल नहीं बोलते, थोड़ा कडुवा बोल निकलता तब टक्कर शुरु होती है। क्योंकि कटुवचन दूसरे को कांटे की तरह पिंच होता है। इसके लिए स्व के भाव में रहो, स्व के अभिमान में नहीं आओ। दूरादेशी बनो लेकिन दिमाग का नशा नहीं रखो। प्रीत रखो लेकिन स्वार्थी नहीं बनो। जब इन्हीं बातों की कमी होती है तब एक दूसरे का संस्कार आपस में टकराता है। इसके लिए बहुत सहज विधि बाबा ने सुनाई है ''पहले आप'' का पाठ पक्का रखो। यह एक ऐसी विधि है जिससे सब अपना बन जाते हैं। पहले मैं – यह दूर करता, पहले आप - यह पास ले आता। दूसरा जैसे बाबा जो कहे हाँ जी करते, ऐसे एक दूसरे को भी हाँ जी करो। ना कभी नहीं करो। ओ.के. कहते चलो तो सब ओ.के. हो जायेगा। हरेक का उत्साह बढ़ाओ। उत्साह दूसरे के मन को प्रफुल्लित करता है। इसके लिए अपना सब कुछ त्याग चाहिए। बाबा ने हमें अष्ट शक्तियां दी हैं, उसमें सहनशीलता की शक्ति भी विशेष है। कोई भी बड़ा बना है तो उसने दुनिया की अनेक बातों को सहन किया है। तो हम भी जब एक दूसरे की छोटी-छोटी बातों को सहन करेंगे तब प्यारे बनेंगे।

5. एक बात की सबसे रिक्वेस्ट करती हूँ - ईश्वरीय मर्यादायें हम सबका धर्म है, इन्हें कभी भी लूज नहीं करो। माया को कहीं से भी घुसने न दो। हम मन मौजी नहीं है, बाबा के मौजी हैं। इसलिए मन की मौजों को त्याग दो। इसका करो त्याग और बाबा के अतिन्द्रीय सुख के झूलों में झूलो। कोई भी बात की राय लेना हो तो भले लो, सैलवेशन चाहिए भले पूछो - लेकिन आपस में पार्टी नहीं बनाओ। यदि किसी की एक्टिविटी अच्छी नहीं लगती है तो मीठे रूप से रुहरिहान करके एक दो के ध्यान पर दो, राय दो लेकिन मास्टर बनकर, शिक्षक बनकर नहीं करो। उसका वातावरण, वायुमण्डल नहीं बनाओ। एक दो की कमियों का वर्णन न करके गुणों का वर्णन करो।

6. हमारा ईश्वरीय परिवार एक है, हमारे ईश्वरीय परिवार का झण्डा दुनिया में कामय होना है। इस एकता के झण्डे को कोई तोड़ नहीं सकता। हमारी एकता का झण्डा विश्व को एक बनायेगा। सदा आपस में एक होकर रहो। सर्विस भले कम हो लेकिन एकता को नहीं तोड़ो। एक मत, एक परिवार, एक बाबा, एक पढ़ाई, एक नई दुनिया बनानी है तो सब एक हो। सर्विस भी एकता से चले। दोनों हाथ मिलाकर चलो। चाहे कोई बड़ा हो, चाहे कोई छोटा हो, सब एक हैं। जैसे बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए हरेक जी जान लगा रहे हो - ऐसे ज्ञान-योग-धारणा सबमें महान रहो तो महानता से सहज प्रत्यक्षता हो जायेगी।

(दादी जी ने बड़े की कहानी सुनाई) जो बड़ा खाते हैं – उससे किसी ने पूछो ऐ बड़ा तू बड़ा कैसे बना? तो बड़े ने उत्तर दिया – पहले मैं खेती में पैदा हुआ, फिर मुझे चक्की में पीसा, फिर पानी में डाला, फिर पीसा, फिर गर्म कढ़ाई में डाला, फिर ठण्डे पानी में डाला, फिर पानी से निकाल दही में डाला तो मैं फूल गया। तो बड़ा बनना है तो कढ़ाई में जलना सीखना होगा। जब तक स्वयं जलता नहीं तब तक वो बड़ा नहीं होता। बड़ा बनना है तो कोई पीसेगा, कोई जलायेगा, कोई शीतल ठण्डा पानी भी देगा। कोई खाकर प्यार भी देगा - तब बड़ा बनेंगे। इसलिए यह कभी नहीं कहो कब तक सहन करेंगे। सहन करो तो बड़ा बनो। अच्छा ओम् शान्ति।